



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

वातायन



कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

वातायन के 100 वां अंक का विमोचन



दिनांक 23 जुलाई, 2021 को आयोजित कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में महालेखाकार महोदय द्वारा वातायन के 100 वें अंक का विमोचन।



वातायन



वर्ष 2021-22

(अप्रैल, 2021 से सितंबर, 2021)

अंक: 101

अवधि-छमाही

राजभाषा की सेवा में

कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर -751001

मुख पृष्ठ: श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी

वातायन पत्रिका परिवार

— संरक्षक —

श्री वी.एम.वी. नवल किशोर

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर

— प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति —

श्री दिनमणि मल्लिक

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री श्रीराज अशोक

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)

श्री एम.आर. हरि प्रशांत

उप महालेखाकार (निधि)

— संपादक —

श्री यशवंत कुमार वर्मा

वरिष्ठ अनुवादक

— सहयोग —

श्री राजेश कुमार कटरे, कनिष्ठ अनुवादक

श्री सुन्दर लाल साव, कनिष्ठ अनुवादक

कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वातायन

संरक्षक का संदेश



हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वातायन' के 101 वें अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए गर्व की बात है। कार्यालय में हिंदी के प्रगामी उपयोग से यह प्रतीत हो रहा है कि कार्यालयीन स्तर पर हिंदी की निरंतर प्रगति हो रही है। यह खुशी की बात है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में सकारात्मक सहयोग मिल रहा है।

प्रतिवर्ष राजभाषा पत्रिका 'वातायन' के दो अर्धवार्षिक अंक प्रकाशित होना एवं हर अंक में कुछ नये रचनाकारों को जोड़ना काफी सराहनीय कार्य है।

अंत में, मैं संपादक मंडल सहित सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रकट करता हूँ।

वी.एम.वी नवल किशोर
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)



संदेश



हिंदी पत्रिका 'वातायन' के 101वें अंक का प्रकाशन करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। हमारा कार्यालय हिंदीतर भाषी क्षेत्र के अंतर्गत आता है। केन्द्रीय सरकार का कार्यालय होने के कारण देश के विभिन्न राज्यों के अधिकारी/कर्मचारीगण यहां पदस्थ हैं जिनकी अपनी-अपनी मातृभाषा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से मैं देख रहा हूं कि हिंदीतर भाषी क्षेत्र के अधिकारी/कर्मचारी वातायन पत्रिका के प्रत्येक अंक के लिए रचनाएं देते हैं जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूं। अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह पत्रिका न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना अहम योगदान दे रही है बल्कि सभी भाषा के कार्मिकों में हिंदी भाषा के प्रति लगाव भी पैदा कर रही है जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए सकारात्मक पहल है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ समस्त रचनाकारों तथा सम्पादक मण्डल को बधाई देता हूँ।

दि. मल्लिक

दिनमणि मल्लिक

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादक की कलम से



इस कार्यालय के महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) के प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में अर्धवार्षिक ई-पत्रिका वातायन के 101वें अंक के प्रकाशन पर उत्साहित हूं। मैंने अनुभव किया है कि हिन्दी संबंधित कोई भी आयोजन में अधिकारी/कर्मचारी गण बड़ी संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाते हैं। इससे कार्यालयीन कर्मियों में हिन्दी के प्रति लगाव स्पष्ट दिखायी पड़ता है।

भारत सरकार, राजभाषा विभाग के दिशा निर्देशों में हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है। कोरोना महामारी में भी इस कार्यालय का प्रदर्शन लक्ष्य के अनुरूप रहा तथा कोरोना गाईडलाइन का पालन करते हुए हिन्दी संबंधित सभी आयोजन सफल रहे।

अंत में पूर्व अंक (100वां विशेषांक) के लिए भेजे गए आपके बहुमूल्य सुझाव हेतु मैं आभार प्रकट करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि इस अंक के लिए भी आपके सुझाव हमें प्राप्त होंगे। संपादक मंडली सहित समस्त रचनाकारों को कोटिश: बधाई।

“हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि, लायेगी देश में समृद्धि”

सधन्यवाद ।

यशवंत वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक



अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	महालेखाकार का संदेश		
2	वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) का संदेश		
3	संपादकीय		
रचनाएँ			
1.	छोटी संवाद	श्री दिनमणि मल्लिक, वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)	1
2.	समर्थन मूल्य एवं फसल	श्री रवि जायसवाल, लेखाकार	2
3.	धक्का जरूरी है	यशवंत कुमार वर्मा, वरि अनुवादक	4
4.	ईरादे अब वरदानी हो गए है	श्री राजेश कुमार कटरे, कनि. अनुवादक	6
5.	दस्तक	श्री आलोक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	8
6.	मातृ-भूमि	श्री प्रकाश चंद्र गौड़, लिपिक	11
7.	माँ की ममता हार गई	श्रीमती शांतिलता सेठी, पर्यवेक्षक	12
8.	हे भारत के राम जगो	श्री तिलक राम, डीईओ	15
9.	स्त्री शिक्षा	श्रीमती सोनी कुमारी साव, डीईओ	18
10.	वो कौन है?	श्री अंबिका चरण पात्र, सहायक पर्यवेक्षक	22
11.	जैसे आया वैसे ही गया	सुश्री बबिता मणि, कनि. अनुवादक	23
12.	आओ मिलकर साथ चलें	श्री परमजीत , डीईओ	27
13.	सभ्यता एवं संस्कृति	श्री सुंदर साव, कनि. अनुवादक	28
14.	वर्षा रानी	श्री आशुतोष दास, सहा.लेखा अधिकारी	30
विविधा			
1	पखवाड़ा रिपोर्ट		31
2	कार्यालय समाचार		37
3	पाठकों की पाती		40

छोटी संवाद



श्री दिनमणि मल्लिक
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)



संयोगवश किसी दोपहर में
मुझे यह सुनने का अवसर मिला....

हे प्रिय,

तुम बहुत प्यारी और सुंदर हो,
कुछ और क्षण मेरे पास क्यों नहीं ठहरती हो।
बातें हम कर सकें सुकून से,
रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे देख सकूं करीब से।
आज सुबह मैं खिला नहीं था पूरा,
शायद इसलिए बचा हुआ हूँ,
पर कल नहीं रहूँगा।



तुम कितने भले हो,
और बातें भी मीठी करते हो।
मेरा जीवन भी नहीं है ज्यादा,
मेरा मकसद है मुझे निभाना।
इसलिए हूँ मैं इतनी जल्दी में
बागीचे के हर फूल को है मुझे महकाना।
करती हूँ वादा, मैं आउंगी वापस
पर होगा मुझे लौट जाना।
इस बार बाग के कोने तक...
उड़ती रहूँगी ऐसे
बांटती रहूँगी कला।



(एक स्वर में):
आप हैं साथ!
आप हैं साथ!
आओ जीएं!
आओ जीएं!
हम ना मरें!
मरने तक!

(कसम से, छुपकर नहीं सुना मैंने)

समर्थन मूल्य एवं फसल



रवि कुमार
लेखाकार

वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर इस देश में किसान इसलिए परेशान है कि उन्हें उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। वहीं उपभोक्ता इसलिए परेशान है कि उन्हें महंगाई के चलते ऊंचे दामों पर अनाज खरीदना पड़ रहा है। अगर सरकार एमएसपी को अत्यधिक मात्रा में बढ़ाती है तो महंगाई बढ़ेगी और उपभोक्ता नाराज हो जाएंगे इतना ही नहीं सरकारी खजाने पर भी अतिरिक्त बोझ पड़ सकता है और फिर उस बोझ का खामियाजा सरकार या तो डीजल पेट्रोल को महंगा कर के वसूलेगी या जीएसटी के गणित को मन मुताबिक बिठाकर। दूसरी तरफ यदि सरकार केवल महंगाई को नियंत्रित करने पर ध्यान देती है और किसानों की जायज मांगों को अनावश्यक रूप से की गई बच्चे की जिद्द समझकर नजरअंदाज कर देती है तो यह अन्नदाता के साथ स्वयं अन्न का अपमान होगा, क्योंकि न्याय पूर्ण तरीके से समावेशी और सतत विकास ही अंतिम रूप से किसी भी लोकतंत्र का लक्ष्य होता है। अंत सरकार इस मामले में ठीक उसी प्रकार से फंस गई है जिस प्रकार से पति मां और पत्नी के बीच फंस जाता है, दोनों में से ना तो किसी को छोड़ सकता है और ना ही किसी एक को पूर्ण रूप से संतुष्ट कर सकता है अतः संतुलन के अलावा कोई और तरीका नहीं बचता परंतु अपने बेटे की विवशता ना तो माँ पूरी तरह से समझ पाती है और ना ही पत्नी अपनी जिद छोड़ कर पति की मजबूरी समझने को तैयार हो पाती है और इस प्रकार एक घर बनते बनते टूटने की कगार पर पहुंच जाता है। अब समय आ गया है कि समाज का प्रत्येक नागरिक यह समझ ले कि किसी भी सरकार रूपी पति के कमजोर होने पर देश रूपी परिवार का टूटना ना केवल अराजकता उत्पन्न करता है अपितु भावी पीढ़ी के लिए भी घातक होता है। हमें यह समझने की अत्यंत आवश्यकता है कि सरकारी महकमे का एक विभाग (सीएसीपी) कृषि लागत एवं मूल्य आयोग कृषि मंत्रालय के अंतर्गत काम करते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य अर्थात (एमएसपी) की घोषणा करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान केंद्रित करता है -

1. विभिन्न फसलों के उत्पादन लागत क्या है
2. घरेलू और वैश्विक बाजार में विभिन्न फसलों की मांग पूर्ति और मूल्यों की क्या स्थिति है
3. फसलों को उत्पन्न करते समय भूमि जल पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों का कितना समुचित उपयोग किया गया है
4. विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए विभिन्न प्रकार से किए गए एम एस पी निर्धारण का विभिन्न प्रकार के उपभोक्ताओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

इतना ही नहीं सरकार एमएसपी के माध्यम से जिन फसलों की कमी होती है उनका एमएसपी बढ़ाकर देश में उनके उत्पादन और पूर्ति को भी बढ़ाती है जिससे उस वस्तुनिष्ठ फसल की कीमतों में अत्यधिक बढ़ोतरी ना हो और साथ ही यदि किसी अनाज का अत्यधिक उत्पादन देश में हो रहा है और फसलों में विभिन्नता बनाए रखने में इस वजह से समस्या उत्पन्न हो रही है तो सरकार कोशिश करती है कि उन फसलों का एमएसपी तुलनात्मक रूप से थोड़ा कम या स्थिर कर दिया जाए (गेहूँ चावल आदि) ताकि देश के किसान उन फसलों को पैदा कर सके जिन फसलों की देश में कमी है जैसे मोटा अनाज दालें इत्यादि। अतः उपयुक्त विश्लेषण से हमें यह समझने की आवश्यकता है कि सरकार एमएसपी के माध्यम से केवल किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्रदान न करके कई अन्य जन कल्याणकारी लक्ष्यों की प्राप्ति का भी यथासंभव प्रयास करती है। यद्यपि हम जानते हैं कि आजादी के बाद से ही कृषि क्षेत्र में दोषपूर्ण सरकारी नीतियों फसल पद्धति तथा भूमि सुधार आंदोलनों की असफलता तथा तत्पश्चात हुई हरित क्रांति से उत्पन्न नकारात्मक प्रभावों की वजह से उत्पन्न कृषकों की आय असमानता एवं बिचौलियों की समस्याओं के कारण आए दिन देश में कृषक आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं और साथ ही फसल चक्र और फसल उत्पादन की असमानता के कारण पोषण संबंधी समस्याएं भी भुखमरी सूचकांक में भारत को पड़ोसी देशों से भी गंभीर श्रेणी में दिखा रही है।



धक्का जरूरी है....



श्री यशवंत कुमार वर्मा

वरिष्ठ अनुवादक

गाड़ी यदि सेल्फ स्टार्ट होती नहीं कभी ! तो धक्का लगाना ही पड़ता है। अर्थात् जिन्हे भी धक्के लगे ! खासकर जो बीबी से धकियाये गये वो निसंदेह शिखर तक पहुंचे ! यह कहावत सौ फीसदी सही है कि हर सफल आदमी के पीछे एक औरत होती है! पर इस कहावत से धक्का गायब है ! सोच कर देखें तो आमतौर पर हर आदमी के पीछे एक औरत तो होती ही है पर कामयाबी की सीढ़ी वही चढ़ते है जिनकी औरतों ने उन्हें धक्का दिया हो !

अब अपने तुलसी दास जी को ही देख लें। यदि रत्नावली ने उसे एक रात न धकियाया होता तो आज हमें क्या रामचरित मानस जैसे महान कृति के दर्शन सुलभ होते ? कदाचित नहीं। छोटे से गांव का यह भला, सीधा-सादा आदमी बाकी नये शादी-शुदा लोगों की ही तरह अपनी सुंदर पत्नी (शुरुआत में सुंदर ही लगती है) पर जान छिड़कता था। इतने दीवाने थे ये अपनी रूपसी पत्नी के कि उसके मायके जाने पर बदहवास होकर, भारी बरसात में उससे मिलने निकल पड़े ! ससुराल तक जाने के रास्ते में पड़ी बाढ़ भारी नदी एक अकड़े मुर्दे को नाव बना कर पार की और जब ससुराल का दरवाजा नहीं खुला तो अपनी पत्नी के कमरे की खिड़की से लटके अजगर को रस्सी बनाकर कमरे तक चढ़े। वो तो भला हो रत्नावली का जिसने अपने प्रेमी पति को धिक्कारा ! उलाहना दिया कि इस हाड़ मांस के शरीर के बजाय यदि राम से इतनी ही लौ लगा ली होती तो बेडा पार हो गया होगा तुम्हारा ! रत्नावली के इस धक्के से तुलसीदास उबरे ! राम से नाता जोड़ बैठे, खुद तो भवसागर पार हुये ही अनगिनत और लोगो को भी पार कराने के निमित्त बने ! सोच कर देखिये उस रात रत्नावली धक्का नहीं देती तुलसीदास को तो क्या आज आप और हम उन्हें जानते ! राम को घर घर पहुँचाया रत्नावली के उस धक्के ने ! तुलसीदास इतने भले मानस थे कि वो उस धक्के का आभारी होना भूले नहीं ! अपनी रची पोथियों को रत्नावली से मिलते जुलते, दोहावली, कवितावली, गीतावली जैसे नाम दिये ताकि आने वाले लोग धक्के की महिमा को याद रख सके।

सिद्धार्थ को बुद्ध बनाने में यशोधरा की भूमिका अवश्य महती रही होगी ! अपने आप में सीमित गुमसुम ब्यक्ति को किसी राजा की बेटी यशोधरा कैसे बर्दाश्त कर सकती थी ! संभव है यशोधरा की रोज रोज की नसीहतों से ही उकता कर सिद्धार्थ उन्हें सोता छोड़ चुपचाप घर से निकले और महापुरुष होकर प्रसिद्ध हुये। लाखों ऐसे युवाओं के आश्रयदाता रहे जो देश-समाज से धकियाये गये।

हमारा देश संतो की धरा है यहां संत बड़े सम्मान के साथ पूजे जाते हैं। लेकिन क्या आपने अपना दिमाग खपाने का प्रयास किया है कि यहां संत इतने ज्यादा क्यों बनते हैं। चलिए बताते हैं, एक सर्वे के अनुसार भारत में पुरुष प्रताड़ना का ग्राफ अन्य देशों से उच्चतम है। इनके एक सर्वेकर्ता ने अपनी बीबी के डर पर विजय हासिल करते हुए लाखों शादी-शुदा लोगों के पीड़ा को उजागर करने का माध्यम बना। बात स्पष्ट है कि यदि भारत में संतों की संख्या पर लगाम लगाना है तो बीबीओं को अपनी जुबान पर लगाम लगाना होगा।

आजकल आनलाईन मार्केटिंग का चलन बहुत ज्यादा है, कभी सोचा है कि यह आइडिया क्यों और कैसे आया होगा? चीन का एक आम आदमी अपनी बीबी को अक्सर बाजार ले जाता घंटों असहनीय इंतजार के बाद कोई चीज बीबी को पसंद आती भी तो घर आते-आते वह नापसंदगी में तब्दील हो जाती और इनके लिए जिम्मेदार हमेशा उनका अबोध पति ही होता था। बारंबार प्रताड़ना से तंग आकर उनके दिमाग ने काम किया और घर बैठे आनलाईन मार्केटिंग स्टोर खोलकर आज दुनिया जगत में बुलंदी की शिखर पर काबिज है।

यूनान में एक बड़े दार्शनिक हुए, नाम था सुकराता। बीबी के धक्को से इनका भी नाम हुआ। बीबी की प्रशंसा न कर दर्शन बघारने वालों को बीबीयां फुटी आंख पसंद नहीं करती हैं। वही हुआ जो विधि के विधान में था, एक दिन ये घर के बाहर, अपने चले चपाटियों के बीच बैठे बाते बना रहे थे ! बीबी की बातें सुन नहीं रहे थे ! इनकी पत्नी, जेंथीफ धमधम करती आई और इनके सर पर ठंडे पानी से भरी बाल्टी उडेल कर लौट गई ! भीगे बिल्ले बने सुकरात सोच में डूब गये और फिर उन्होंने ऐसे ऐसे ज्ञान की बातें कही जो अब भी लोग सच मानते हैं। ये बातें वहां के राजा को नागवार गुजरी आखिर हो भी कैसे सकता है कोई राजा के रहते प्रजा को कैसे ज्ञान बांट सकता है? उसने सुकरात को पकड़ मंगाया ! जेल भेजे गये सुकरात ! फिर एक दिन सुकरात को दो विकल्प मिले ! जहर पीयें वो या ज्ञान बाटना बंद कर बीबी के पास चले जाए। अंत तो आप सबको पता ही है, बेचारा बीबी के पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया और अमर हो गये।

अब्राहम लिंकन अपनी बीबी की वजह से घर जाने में घबराते थे और ऑफिस में ही बने रहना पसंद करते थे ! अब आदमी ऑफिस में रहेगा तो काम करेगा ही ! छुट्टी के बाद भी यदि कोई अधिकारी दफ्तर में रहना पसंद करता है तो बात समझ जाइए। अमेरिका के सौलहवें राष्ट्रपति लिंकन की इसी कर्मठता से वह अमेरिका बना जिसका पूरी दुनिया में नाम है ! और इसके लिये अमेरिकियों को मैरी का शुक्रगुजार होना ही चाहिये ! क्लिंगटन ! आपको क्या लगता है कि बिल क्लिंगटन ऐसे ही सेंट में अमेरिका के राष्ट्रपति हो गये ! उन्हें राष्ट्र का पति बनाया उनकी अपनी पत्नी ने ! जो पढा और सुना गया है वो तो यही बताता है कि हिलेरी उन्हें नियमित रूप से पीटा करती थीं ! पिटे कुटे क्लिंगटन सरपट दौड़े और राष्ट्रपति बनने तक दौड़ते ही रहे ! मुझे पूरा यकीन है जितने भी बड़े-बड़े लोग हुये हैं, अपनी अपनी बीबी से धकियाये गये लोग हैं ! आदमी की फितरत ही है वो बिना धकेले कुछ कर ही नहीं पाता । ऐसे में समझदार बीबियाँ धक्का देकर अपने शौहर को बड़ा काम करने लायक बनाती हैं । बुद्ध, तुलसीदास, सुकरात और मुझमें यही अंतर है। मेरी सुंदर पत्नी ने मुझे अभी तक धक्का नहीं दिया । मैं आज एक सामान्य इंसान ही बना रह गया और इसके लिए मैं अपनी बीबी को पूर्ण रूप से जिम्मेदार ठहराता हूँ !

इरादे अब वरदानी हो गए हैं



श्री राजेश कुमार कटरे
कनिष्ठ अनुवादक

बस पत्थरों की मूर्तों को,
सुदृढ़ बनाते ही रहे हैं।
हम भक्तिभाव से,
अगणित मनके फेरते ही रहे हैं।
निर्जन ये न समझें हम डरकर,
उनके फरियादी हो गए हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 11।

रास्ते भी मंदिरों के,
अब पथरीले हो रहे हैं।
कदम-कदम पर पांवों में,
अब छाले पड़ रहे हैं।
तकलीफें ये न समझें,
कि दिन हमारे बदहाली हो गए हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 12।

माना कि ये बेजान कंकर,
भी अब शंकर हो रहे हैं।
उन्हीं की रोज ठोकरों से,
हम चोटिल बहुत हो रहे हैं।
वे ये न समझें हम रूक कर,
सिर्फ अब मरहम लगा रहे हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 13।

किसी पाषाण मूर्त की,
जब-जब हम अर्चना कर रहे हैं।
हमें व्यवधान, ही व्यवधान वहां,
औरों को सहज समाधान मिल रहे हैं।
अड़चनें ये न समझें हम थक कर,
अवसादी हो गए हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 14।

हम श्रद्धा से पत्थरों पर,
मूर्तें तराशते ही रहे हैं।
हाथों के छाले हमारी,
उम्मीदें उजाड़ते ही रहे हैं।
लकीरें ये न समझें हम उजड़ कर,
लाचार हो गए हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 15।

आस्था के ये दीपक हम,
पत्थरों की मूर्तों पर जलाते ही रहे हैं।
अमावस के साये यहां,
फिर भी हम पर मंडराते ही रहे हैं।
अंधेरे ये न समझें कि
हमारे पथ अवरोधी हो गए हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 16।

आदमी को आदमी से,
हम विचारों में बांधते ही रहे हैं।
अफसोस ! जिनको जितनी दी है इज्जत,
वे उतनी सिद्धतों से रौंदते ही रहे हैं।
दुराचारी ये न समझें कि
हम टूटकर अवसानी हो गए हैं।
लाख ठोकरें खा-खाकर,
इरादे अब वरदानी हो गए हैं। 17।



दस्तक



आलोक कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

तारीख 26 जुलाई 2005। मैं पटना से इलाहाबाद जाने वाली ट्रेन लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस में बैठा था। रात के 11:15 बजे थे। मेरे मन में अजीब सी उत्सुकता थी। मैं बीटेक में एडमिशन लेने इलाहाबाद जा रहा था। टीवी में इंजीनियरिंग कॉलेज के जो दृश्य मैं देखता था, वही सब मेरे आंखों के आगे बार-बार आ रहे थे। सोच रहा था कि क्या सच में मेरा कॉलेज भी वैसा ही होगा जैसा टीवी में देखा करता था। यही सोचते-सोचते कब 8:00 बज गए पता भी नहीं चला। स्टेशन से उतरते ही मैंने होटल में कमरा लिया और हाथ मुंह धोकर नाश्ता किया। फिर जरूरी कागजात लेकर कॉलेज की ओर चल पड़ा। कॉलेज में मेरे बड़े भाई के मित्र नवनीत जो मुझे से 1 साल सीनियर थे, उनसे बात हो गई थी। वह कॉलेज के मेन गेट पर ही मेरा इंतजार कर रहे थे। उनसे मिलने के बाद मैंने अपना एडमिशन बी टेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग में करवाया। फिर उन्होंने मुझे बताया कि मेरे रहने के लिए एक कमरा किराए पर उन्होंने ले लिया है। मैं सामान लेकर उनके साथ निकल पड़ा। थोड़ी देर बाद एक बड़े मकान के पास आकर हम रुके। नवनीत भाई ने बताया कि यही मकान है। मकान बाहर से वाकई बहुत खूबसूरत था। फिर हम लोग अंदर गए और अपने कमरे में पहुंचे। कमरा काफी बड़ा और मुझे बहुत पसंद भी था। मेरे लिए खाने का कुछ सामान देकर नवनीत भाई चले गए और मैं भी अपना सामान निकाल कर कमरे को ठीक करने लगा। कमरा ठीक करने में मुझे 2 घंटे लगे। सब सामान सही ढंग से रखने के बाद मैं आराम करने लगा। शाम के 5:00 बज गए थे। मेरे बगल के दो कमरों में कुछ सीनियर और रहते थे जिन से बात करके मुझे अच्छा लगा।

रात के खाने के बाद मैंने घर पर थोड़ी देर बाद की और सोने चला गया। थकान के कारण मुझे नींद भी जल्दी आ गई। मैं गहरी नींद में सो रहा था तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। मैं गहरी नींद में था इसलिए बड़ी धीमी सी आवाज मुझे सुनाई दी। मैं लेटा रहा। फिर से किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। मैं फिर भी लेटा रहा। करीब 2 मिनट तक दस्तक की आवाज आने के बाद आखिर मुझे उठना ही पड़ा। मैं भी यह कहते हुए उठा कि इतनी रात में कौन है। लाइट जलाने पर मैंने देखा कि रात के 2:00 बजे हैं। अब दरवाजे पर दस्तक बंद हो गई थी। पर किसी की आहट तो थी। मैं थोड़ा डर गया। इस सोच में ही खड़ा रहा कि दरवाजा खोलूं या नहीं। थोड़ी देर बाद लाइट बंद किए बिना ही मैं पलंग पर लेट गया। अभी मैं सोच ही रहा था कि दरवाजे पर कौन हो सकता है, तभी छत पर किसी के जोर जोर से चलने की आवाज आने लगी। अब मैं बुरी तरह से

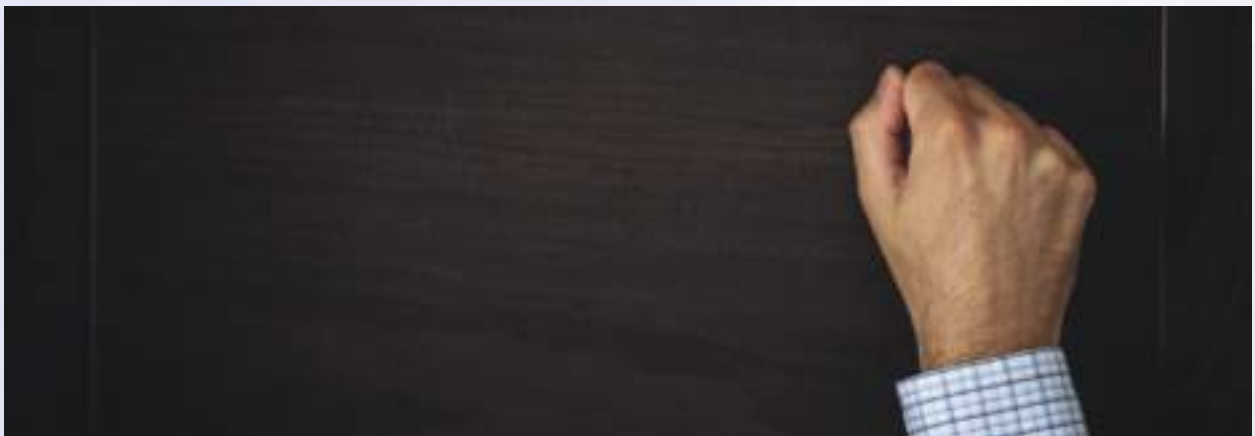
डर गया था। किसी तरह से आंख बंद करके घंटों लेटा रहा। सुबह जब अगल-बगल से सामान्य आवाज में आने लगे तो उठ कर जल्दी बाहर गया और देखा कि बगल के कुछ सीनियर लोग आपस में बातें कर रहे थे। मैंने सोचा कि रात वाली बात उन्हें बताऊं पर थोड़ा संकोच हुआ। सोचा कि वे लोग मजाक उड़ाएंगे। मन में यह भी ख्याल आने लगा कि कहीं यह मेरा वहम तो नहीं था। नई जगह पर होने के कारण हो सकता है कि मैं ही कुछ ज्यादा सोच रहा हूं। यही सब सोचकर मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। तैयार होकर कॉलेज गया। वहां कुछ नए लड़कों से दोस्ती हुई। एक लड़का था रॉबर्ट, जो मेरे ठीक नीचे वाले फ्लैट में अपने भैया-भाभी के साथ रहता था। शाम में कॉलेज से वापस मैं रॉबर्ट के साथ ही लौटा। रास्ते में उसे रात वाली बात बताने की इच्छा हुई पर नहीं बताया। रात का खाना खा कर पेट भर गया और लाइट बंद किए बिना ही सोने लगा। कल रात की बात सोचते-सोचते मेरी आंख लग गई। कितनी देर तक मैं सोया रहा यह तो याद नहीं, पर दरवाजे पर हुई एक तेज दस्तक ने मेरी नींद खोल दी। मैं बहुत ज्यादा डर गया था। बिल्कुल कल रात जैसे ही कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। जब मैंने समय देखा तो ठीक 2:00 बज रहे थे। मैं इतना डर गया था कि बेड पर से हिल तक नहीं पा रहा था। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं। डर से मेरे पसीने छूट रहे थे। आंख बंद करके भगवान का नाम लेने के अलावा और कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। मैंने वही शुरू कर दिया। घंटों बाद मेरी आंख लगी। सुबह जब उठा तो सबसे पहले बाहर गया और अपने सीनियर्स को रात वाली बात बताई। उन लोगों ने मेरा यकीन नहीं किया। उल्टा वे लोग मेरा मजाक उड़ाने लगे।

मैंने सोचा कि उन लोगों को आखिर बात बताया है क्यों। खैर, किसी तरह तैयार होकर मैं कॉलेज गया। वहां रॉबर्ट से मिला तो सोचा कि उसे भी बताऊं या नहीं। काफी देर सोचने के बाद मैंने उसे वह बात बताई। पहले दो बार थोड़ा मुस्कुराया, फिर जब मैंने उसकी तरफ गंभीरता से देखा तो उसने मुझसे पूछा कि क्या यह सच है। मैंने कहा, "यह पहली नहीं दूसरी बार है। यकीन नहीं आता तो तुम भी आकर देख लो"। शुरू में उसने मना किया पर मेरे बार-बार कहने पर वह भी रात में मेरे कमरे में रुकने को तैयार हो गया।

रात के 9:00 बजे थे। मैं खाना खाकर रॉबर्ट का इंतजार कर रहा था। थोड़ी देर में ही रॉबर्ट खाना खाकर आ गया। हमने थोड़ी देर कॉलेज की बातें की और फिर सोने चले गए। रॉबर्ट मेरे बगल में ही लेटा था। मुझे तो नींद ही नहीं आ रही थी। पर उसके खर्राटे शुरू हो चुके थे। और उन खर्राटों की आवाज में भी न जाने कैसे मुझे नींद आ ही गई। फिर अचानक मेरी नींद खुली। दरवाजे से दस्तक की आवाज आने लगी थी। घड़ी में भी 2:00 बजे थे। मैंने रॉबर्ट को जगाया। उठते ही उसने अपनी बड़ी आंखों से मुझे देखा। नींद से भरी उसकी बड़ी लाल आंखों ने मुझे और भी डरा दिया। मेरी चीखें निकलने ही वाली थीं कि किचन के दरवाजे से भी दस्तक की आवाज आने लगी। रॉबर्ट ने मेरा हाथ पकड़ लिया और दिखाते हुए कहा कि आवाज तो किचन से आ रही है। अब हम दोनों बहुत बुरी तरह से डर चुके थे क्योंकि किचन का दरवाजा हमारे सामने ही था। वहां पर किसी के ना होने के बावजूद भी दस्तक की आवाज लगातार आ रही थी। मैंने जब रॉबर्ट को देखा तो वह आंखें बंद कर कुछ मंत्र जाप कर रहा था। उसके इस व्यवहार ने मुझे और भी डरा दिया। मैं एकटक उसे देखता रहा। थोड़ी देर बाद उसने आंखें खोली और मुझसे लोहे का दो टुकड़ा लाने को कहा। मैं इधर-

उधर देखने लगा। बगल में टेबल पर एक ताला और एक छुरी रखी हुई थी। वही उठा कर मैंने उसे दे दिया। अब उसने फिर से आंखें बंद कर ली थी और कुछ बुदबुदाने लगा। एक तरफ दस्तक और दूसरी तरफ रॉबर्ट का यह मंत्र जाप, मैं यह सब समझने की कोशिश कर ही रहा था कि अचानक से वह उठा और दरवाजे की तरफ भागा। जल्दी से दरवाजा खोल बालकनी की ओर दौड़ा। खुद को कमरे में अकेला पाकर मैं भी उसके पीछे दौड़ा। देखा तो वह बालकनी से नीचे झांक रहा था। ताला और छुरी अभी भी उसके हाथ में थे। डरा हुआ तो मैं बहुत था पर किसी तरह हिम्मत करके मैंने उससे पूछा, "भाई, यह क्या कर रहे हो"? उसने मुझसे कहा कि वह औरत और उसका बच्चा दोनों रो रहे हैं। मैं हैरान था क्योंकि किसी के भी रोने की आवाज मुझे सुनाई नहीं दे रही थी जबकि रॉबर्ट के अनुसार उनके रोने की आवाज उसे साफ सुनाई दे रही थी। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मैं बड़ी ही हैरानी से उसे देख रहा था। उसने मुझसे कहा कि अभी चल के सोते हैं इसके बारे में बाद में बात करेंगे। यह कहकर वह कमरे की तरफ चल पड़ा। मैं भी उसके पीछे कमरे में गया और बिना कुछ कहे बेड पर सोने चला गया।

रात में यही सोचता रहा कि उस औरत और बच्चे का जिक्र रॉबर्ट ने क्यों किया। कौन है वह लोग? अगले दिन जब मैं सोकर उठा तो रॉबर्ट जा चुका था। मैं तैयार होकर कॉलेज गया। वहां उससे बात की तो उसने बताया कि उसके पिता चर्च में पादरी हैं। उनसे उसने इस बारे में बात की तो वह बोले कि उन्हें पहले से इस बारे में पता है। यह सब सुनकर मैं एकदम हक्का-बक्का रह गया। फिर उसने बताया, "2 साल पहले वह औरत और बच्चा उसी कमरे में रहते थे जिसमें अभी तुम रह रहे हो। रात में छत से गिरकर दोनों की मौत हो गई थी। उसी के बाद से कभी-कभी ऐसी घटनाएं देखने को मिलती है जैसा तुम्हारे साथ हो रहा है"। यह सारी बातें सुनकर पहले तो मुझे यकीन ना हुआ पर थोड़ी देर बाद फोन पर जब रॉबर्ट ने अपने पिता से बात करवाई तब जाकर मुझे यकीन हुआ। साथ ही मैं उन्होंने यह आश्वासन दिया कि वे लोग किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। इन बातों को मानना मेरे लिए काफी मुश्किल था। शुरू में मुझे बहुत दिक्कत होगी पर धीरे-धीरे मैं खुद को समझाने लगा। इन सब बातों को नजरअंदाज करने लगा। देखते-देखते 4 साल बीत गए और मैं कॉलेज से निकल गया। अब मैं भुवनेश्वर में नौकरी करता हूं। पर जब कभी भी इलाहाबाद या फिर मेरे कॉलेज की चर्चा होती है तो आज भी सारी यादें ताजा हो जाती हैं। और शायद जिंदगी भर याद रहेगी मुझे वह "दस्तक"।



मातृ-भूमि



श्री प्रकाश चंद्र गौड़
लिपिक

जिसके आँचल में फल-फूल बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।
परम हंस बाल्य काल में सब सुख पाए,
जिसके कारण फूल भरे हीरे कहलाए।
हम खेले-कूदे हर वक्त जिसकी प्यारी गोद में,
हे मातृ-भूमि! तुझको निरख मगन क्यों न हो मोड़ में।
पालन, पोषण और जन्म का कारण तू ही,
वक्षस्थल पर कर रही हमें धारण तू ही।
अभयंकर प्रासान और वे महल हमारे बने हुए हैं जहाँ,
तुसा से तुझपर सारे।
हे मातृ-भूमि! जब हम कभी
लीन हो जाएंगे हमें जीवन था।
अन्न तू ही देती है।
बदले में नहीं किसी से तू लेती है।

श्रेष्ठ रूप से रूक विविध के द्वारा,
पोषण करती प्रेम भाव से सदा हमारा।
हे मातृ-भूमि! उपजे ना जो तुझपर कृषि अंकुर कभी,
तो तड़प-तड़प कर जल भरे जठरानल में हम सभी।
पाकर तुझको हमने होगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा।
तेरे ही सुरस सार में सनी हुई है,
फिर अंत समय सार में सनी हुई है।
फिर अंत में तुझमें ही मिल जाएंगे,
जिस प्रेमी का प्रेम हमें सुखदायक होता,
निज सज्जनों को देख हृदय हर्षित हो जाता,
नहीं टूटता जिनसे जीवनभर का नाता।
हे मातृ-भूमि! उन सब में।

माँ की ममता हार गई



श्रीमती शांतिलता सेठी

पर्यवेक्षक

रात का सवा बारह बज चुका है। मेरा बेटा अभी तक घर नहीं लौटा। कितना काम कर रहा है, कब आएगा ? कब खाएगा ? यह सुन कर मेरे पति बोले तुम्हारी यही आदत नहीं गई अब तो वह शादी-शुदा है, दो बच्चों का बाप बन चुका है। क्या उसके लिए मछली की सब्जी बनाकर रखी हो गेट खोलने के समय पास बुला कर दे दोगी, साठ साल उसकी सेवा की अब कितना करोगी ? सो जाओं और मुझे भी सोने दो बार बार लाइट जला कर मेरा नींद खराब कर दे रहीं हों।

चलो सो जाओ। यह सुन कर मैं सोने की कोशिश कर रही थी, उसी वक्त गेट खोलने की आवाज सुनाई दी मैं तुरंत बेटा को बुलाकर उसकी पसंदीदा मछली की सब्जी एक टिफिन में दे दी, वह मेरे हाथों से लेकर ऊपर न जाकर सीढ़ी पर ही बैठकर रो-रो कर खाने लगा। मैं समझ गई कोई बात है वह मुझसे कहना चाहता है। मैं उसके पास गई आँखों के आँसू पोछी और बात क्या है जानने के लिए अंदर बुलाई, मेरे जिगर के टुकड़ा को उस हाल में देखकर मेरे आँखों में आँसू निकल आई, मेरे गोद में सर रखकर वह सो गया। एक घंटा सोने के लिए बोला था मुझे, अपने औलाद के प्रति जो ममता केवल माँ ही दे सकती है। एक घंटा चुपचाप बैठना थोड़ा मुश्किल लग रहा था इसलिए मेरे पति को मेरे पास बैठने के लिए मना ली। वह थोड़ा गरम मिजाज के है, फिर भी वह मेरे पास आकर बैठ गए और बच्चों के बचपन के प्यारें प्यारें लम्हें याद करने लगे।

(पति पत्नी के बीच बीते हुए पलों को याद करते हुए संवाद)

पति : याद है जब बेटा बंगलौर में सेंट्रल बैंक में मैनेजर के पद पर नौकरी किया था तब हम कितने खुश थे।

पत्नी : हाँ जी सब याद है।

पति : जब तुम्हारी तबियत खराब होने लगी। वह शादी करने का फैसला किया और हम लोगों से अच्छे परिवार की लड़की ढूँढने को बोला।

पत्नी : हाँ जी सब याद है।

पत्नी : आप तो भूल गए उसे लड़की पसंद करने को बोला था, पर वह बोला आप अपने पसंद की लड़की से करवा दीजिए। धूम-धाम से हमारी पसंद की लड़की से करवाएं तुम्हारी बात मान कर जान पहचान के घर से लड़की लाए थे। क्योंकि बाद में कुछ समस्या न उपजे।

- पति : हाँ जी लड़की तो अच्छी है। हमारे बेटे की गलती की वजह से ऐसी परिस्थिति देखने को मिली है।
पत्नी-हां तुम ठीक कह रही हो। समधी जी ने कितने समझाये लेकिन बहू किसी की बात नहीं सुनती है। अपनी मनमानी करती रहती है।
- पति : जब हम दोनो को तीर्थ जाने के लिए हरिद्वार भेजे थे हम कितने खुश हो गए थे। हम भी कितने खुश थे बहू कितनी अच्छी है। हमारी अच्छे से ख्याल रख रही है। किसको पता था।
- पत्नी : क्या बोल रहे हो हमारे बेटे का मन साफ है।
- पति : वह दोनो के मिलीभगत के कारनामों है। उनका शत प्रतिशत सहमति होने के कारण बहू ने हमारे साथ ऐसा व्यवहार कर रहीं है।
- पत्नी : नहीं जी बेटे को कुछ पता नहीं है, मेरी ममता में खोट नहीं, कभी नहीं हो सकता मुझे बहुत प्यार करता है। मैं उसकी आंख पढ़ लेती हूँ।
- पत्नी : क्या करेगा बीबी की नहीं मानेगा तो बीबी बुरा मान जाएंगी और हमारी नहीं सुनेगा तो हम बुरा मान जाएंगे। मेरा बेटा क्या कर सकता है।
- पति : पहले सुनो जब हम हरिद्वार से लौटे तो देखे कि पहला तल का इंटेरियर डेकोरेशन हो गया था। मैं बहुत खुश हो गया था लेकिन दोनो अपने बच्चे के साथ ऊपर चले गए हम लोगो को ग्राउंड तल में रहने के लिए छोड़ दिया। एक कालिंग बेल हमारा सहारा था। औलाद जब ठेस पहुंचाते है तब ज्यादा तकलीफ होती है। इसलिए मैं शेरू को ले आया। शेरू जैसा बेटा तुमको कहीं नहीं मिलेगा। जानवर को पाल-पोषकर बड़ा करोगी तो वह विश्वासघात कभी नहीं करेगा। तुम्हारा बेटा अभी सो रहा है जब नींद खुलेगी तो वह तुरंत अपनी बीबी-बच्चे के पास चला जाएगा। हम उनके लिए एक बोझ बन गए है। मैं चाहता हूँ इनसे रिश्ता ही खत्म कर दूँ। तुम्हारे लिए मैं चुप बैठा हूँ।
- पत्नी : क्यों ऐसी बात बोल रहे हो : हमारे बच्चे है, माँ हूँ मैं सारी गलती आँख बंद करके माफ कर देती हूँ।
- पति : यही तो बुरी आदत है उसी का फायदा बहुत उठाया तुम्हारे बच्चे ने मेरी बात मानों ममता, प्यार वार सब छोड़ दो। उन लोगों को हमारी जरूरत नहीं है। हमारी जिंदगी में कितनी खूबसूरत यादें है। चलों उन यादों को ताजा करने के लिए कहीं घुमने जाएंगे। फार्म हाउस वहां एक महीना रहेंगे बहुत अच्छा लगेगा।

पत्नी : ठीक है।

हमारी बात सुन कर शेरू जाग गया और चिल्लाने लगा।

शेरू ने मेरे बेटे के पास आकर उसे गोद से उठाने लगा मेरे बेटे की नींद टूट गयी और घड़ी को देखकर बिना कुछ ना बोले ऊपर चला गया। यह देख कर मेरे पति मुझे बोले – तुम ऐसे कसमकस में हो जिससे निकलना तुम्हारे लिए मुश्किल हो जाएगा। सुबह होते ही मैं अपने पति के साथ फार्म हाउस चली गई वहां

मेरा मन नहीं माना आठ दिन रहने के बाद- मैंने घर आने की जिद्द की यह देख कर मेरे पति बहुत समझाए और बोले बेटे के कहने पर वह मुझे ले कर आए है मेरे जिद्द की वजह से मेरे पति मुझे घर ले आए, हम जब घर पहुंचे देखें तो उस घर के सामने शुभलक्ष्मी गेस्ट हाउस लिखा हुआ है।

मैंने अपने बेटे को पूछी यह सब क्या है ? तो उसने कहा- तुम लोगों का फार्म हाउस में रहना ही ठीक है। मैं हर शनिवार आप लोगों के पास जाऊंगा और एक नौकर आप लोगो के पास रहेगा।

मेरे बेटे को मैं ऐसे देख रही थी और मेरे पैरो के नीचे से जमीन खिसकी जा रही थी। आकाश मेरे सर के ऊपर घूम रहा था। मैं नीचे बैठने जा रही थी। मेरे पति ने मुझे अपने दोनों हाथों से पकड़ लिए और अपने कंधे पर मेरा हाथ रख कर थप-थपाये। मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गई। मेरी बात मान कर मेरे पति मकान को मेरे बेटे के नाम पर कर दिए थे। बेटा हमारे साथ ऐसा सलूक करेगा, मैं कभी सोच नहीं पाई। उसके छल के आगे एक माँ की ममता हार गई।

इस तरह की हालत की शिकार होकर बहुत सारे माता-पिता अपने बच्चों से दूर हो कर वृद्धाश्रम में अपना जीवन बिता रहे है।

संदेश:- वृद्ध माता-पिता को बोझ न समझ के अपने बच्चों की तरह पालना चाहिए। उन लोगों को केवल थोड़ा सा प्यार ममता की जरूरत है, और कुछ नहीं।



हे भारत के राम जगो (संकलित)



श्री तिलक कुमार
डी.ई.ओ. "ग्रेड-बी"

हे भारत के राम जगो मैं तुम्हें जगाने आया हूँ,
और सौ धर्मों का धर्म एक बलिदान बताने आया हूँ।
सुनो हिमालय कैद हुआ है दुश्मन की जंजीरों में,
आज बता दो कितना पानी है भारत के वीरों में।
खड़ी शत्रु की फौज द्वार पर आज तुम्हें ललकार रही,
सोए सिंह जगो भारत के माता तुम्हें पुकार रही।
रण की भेरी बज रही उठो मोह निद्रा त्यागो,
पहला शीश चढ़ाने वाले माँ के वीर पुत्र जागो।
बलिदान के वज्रदंड पर देशभक्त की ध्वजा जगे,
रण के कंकर पैसे हैं वे राष्ट्रहित की ध्वजा जगे।
अग्निपंथ के पंथी जागो शीश हथेली पर रखकर,
और जागो रक्त के भक्त लाडलो जागो सिर के सौदागर।

खप्पर वाली काली जागे जागे दुर्गा बर्बडा,
रक्तबीज का रक्त चाटने वाली जागे चामुंडा।
नर मुंडो की माला वाला जगे कपाली कैलाशी,
रज की चंडी घर-घर नाचे मौत कहे प्यासी-प्यासी।
रावण का वध स्वयं करूंगा कहने वाला राम जगे,
कौरव शेष न एक बचेगा कहने वाला श्याम जगे।
परशुराम का फरशा जागे रघुनंदन का बाण जगे,

यदुनंदन का चक्र जगे अर्जुन का धनुष महान जगे।
 चोटी वाला चाणक जागे पौरुष परूष महान जगे,
 सेल्युकस को कसने वाला चंद्रगुप्त बलवान जगे।
 हठी हमीर जगे जिसने झुकना कभी ना जाना,
 जगे पद्मिनी का जौहर जागे केसरिया बाना।
 देशभक्त का जीवित झंडा आजादी का दिवाना,
 राणा प्रताप का सिंह जगे और हल्दी घाटी का राना।
 दक्षिण वाला जगे शिवाजी खून शाह जी का ताजा,
 मरने की हठ ठाना करते विकट मराठों के राजी।
 क्षत्रशाल बुंदेला जागे पंजाबी कृपाण जगे,
 दो दिन जिया शेर के माफिक वो टिपू सुल्तान जगे।
 कलवाहे का जगे मोर्चा जागे झाँसी की रानी,
 अहमदशाह जगे लखनऊ का जगे कुवंर सिंह बलिदानी।

कलवाहे का जगे मोर्चा और पानीपत का मैदान जगे,
 भगत सिंह की फाँसी जागे राजगुरु के प्राण जगे।
 जिसकी छोटी सी लकुटी से संगीने भी हार गयीं-बापू,
 हिटलर को जिता वे फौजों सात समुंदर पार गईं।
 मानवता का प्राण जगे और भारत का अभिमान जगे,
 उस लकुटी और लंगोटी वाले बापू का बलिदान जगे।
 आजादी की दुल्हन को जो सबसे पहले चूम गया,
 स्वयं कफन की गाँठ बाँधकर सातो भाँवर घूम गया।
 उस सुभाष की आन जगे और उस सुभाष की शान जगे,
 ये भारत देश महान जगे ये भारत की संतान जगे।
 झोली लेकर माँग रहा हूँ कोई शीष दान दे दो,
 भारत का भैरव भूखा है कोई प्राण दे दो।
 खड़ी मृत्यु दुल्हन कुंवारी कोई ब्याह रचा लो,
 अरे कोई मर्द अपने नाम की चूड़ी पहना दो।

कौन वीर निज हृदय रक्त से इसकी माँग भरेगा,
कौन कफन का पलंग बनाकर इसपर शयन करेगा।
ओ कश्मीर हड़पने वाले कान खोल सुनते जाना,
भारत के केसर की कीमत तो केवल सिर है,
और कोहिनूर की कीमत जूते पाँच अजर-अमर है।
रण के खेतों में छाएगा जब अमर मृत्यु का सन्नाटा,
लाशों की जब रोटी होगी और बारूदों का आटा,
सन-सन वीर चलेगें ज्यों बामी के फन वाला।
जो हमसे टकराएगा वो चूर-चूर हो जाएगा,
इस मिट्टी को छूने वाला मिट्टी में मिल जाएगा।
मैं घर-घर में इंकलाब की आग जलाने आया हूँ,
हे भारत के राम जगो मैं तुम्हें जगाने आया हूँ।



स्त्री शिक्षा



श्रीमती सोनी कुमारी साव
डी.ई.ओ.

सामाजिक थान के दो चक्र हैं – पुरुष और स्त्री। दोनों चक्रों के संतुलन पर ही समाज का संचालन संभव है। यदि दोनों में से किसी एक में भी विकार (कमी) आ गया तो गति अवरूद्ध (रूक) जाती है और उनके पारम्परिक सहयोग की परिणति अव्यवस्था में होती है। अतः पतनोन्मुख समाज को नवल (नया) अभ्युदय (प्रारम्भ) के शिखर पर सतारूढ़ करने के लिए पुरुष और नारी में परस्पर सहयोग एवं संतुलन परमावश्यक है। प्रसाद जी ने सच ही लिखा है:-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत-नभ्र-पग-तक में
मानव पीयूष सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।

अशिक्षित पशुता के पथ में मुक्त नहीं होते अर्थात् उनके विचार में किसी प्रकार की कोई स्पष्टता नजर नहीं आती। भाव को अभिव्यक्त सही तरीके से नहीं कर पाते और विचारों में रूढ़िवादीपन झलकता है। शिक्षा सद्ज्ञान देती है। सद्ज्ञान से पाशविक प्रवृत्ति नियंत्रित होती है अर्थात् रूढ़िग्रंथ रीति से मुक्त करने की समझ देती है। आगे पढ़ने और सही ढंग से जानकर व्यक्त करने की शक्ति हमें ज्ञान व शिक्षा से ही मिलती है। साथ ही साथ हर पल सिखने-सिखाने, समझने-समझाने का अवसर भी प्रदान करती है। चीजों को नये ढंग और रूप से निखारने का नजरिया प्रदान करती है, संस्कृति हमारे हास्या एवं निष्ठा को बनाए रखती है। यह परम्परा और सभ्यता को जोड़े रखती है। कला की कालिंदी कल-कल, छल-छल पर प्रवाहित होने लगती है। भट्टहरि ने कहा है:-

साहित्य संगीत कलाविहीन साक्षात् पशुः पुच्छ-विषण्णीन
अतः पुरुष और नारी दोनों के लिए शिक्षा अनिवार्य है।

प्राचीन भारत में नारियों में शिक्षा की ललक थी। गार्गी, मैत्रेयी और भारती विदुषी नारियाँ अपनी प्रतिभा और प्रजा से पुरुषों को पराजित करती रहीं थीं। परंतु स्वार्थी पुरुष समाज के कालांतर उन्हें विद्या एवं शिक्षा से वंचित करने के लिए शास्त्रों में वर्जनाओं का विधान किया। उनके लिए “असुर्यम् पश्या” जैसे

शब्द का सृजन किया गया और अंततः निरक्षरता के नैशांधकार में मग्न होकर अपनी निष्ठुर नियति पर अश्रुपात करने के लिए विवश कर दी गई। कभी हमारे पथ-प्रदर्शन मनीषियों ने नारी को पूजने हेतु बताया, ज्ञान दिया किंतु कुछ लोगों की सोच में इतना मग्नता और निम्नता थी कि सम्मान की आस्था असम्मान में परिवर्तित हो गई। अंधविश्वासों के अंधकार में आत्म-विस्मृत होकर नारी अपनी अस्मिता की पहचान खो दी। सुख-शांति की सरिता निष्कासित हुई और उनकी (नारी) प्रतिभा भी पाँचाली निर्वासना हो गई।

सौभाग्यवश हमारा पुरातनपंथी समाज भी बीसवीं शताब्दी के पुर्नजागरण की वैचारिक क्रांति से उभरी और उसके अज्ञात के अंधकार का प्रवाह समाप्त होकर ज्ञान अर्जन की और बढ़ा। समाज की मंद मनीषा का अवरूद्ध प्रवाह फिर से प्रभावित हुआ और नारियों को भी विद्यालयों, महाविद्यालयों में जाने की अनुमति प्रदान कर दी गई। ज्ञान के इस नूतन आलोक ने उन्हें अपने अधिकार और कर्तव्यों के पहचान की दृष्टि दी है। वे शिक्षित होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी आलौकिक प्रतिभा की छाप छोड़ रही हैं। स्वतंत्रता संग्राम में भी उन्होंने अपने साहस और शौर्य से नूतन इतिहास लिखे।

श्रीमती सरोजनी नायडू, उनकी पुत्री पद्मा नायडू, श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित, श्रीमती सुचेता कृपलानी और श्रीमती इंदिरा गाँधी की अविस्मरणीय राष्ट्र सेवाओं को कृतज्ञ राष्ट्र कभी नहीं भूल सकता। प्रशासन के बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त होकर आज की नारियाँ हमारे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रही हैं। आज वो केंद्रीय और प्रांतीय कार्यालयों, सचिवालयों और अन्य विभागों में ऊँचें पद पर कार्यरत हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और चिकित्सालयों में अपनी प्रतिभा से नूतन इतिहास रच रही हैं।

समय की मार से आहत आज का पुरुष अकेला अपने घर-परिवार को चला नहीं सकता। अगर उनको संपन्न जीवन चाहिए तो दोनों को परस्पर संपन्न और मिल-जुल कर काम करना होगा, नारी वर्ग में जो लगी पाबंदियाँ, बेड़ियाँ और रूकावट को तोड़ने का अब समय आ चुका है। आज नारी के संबंध में हम सोच को बदल कर नवीन प्राण-उर्जा का संचार कर सकते हैं। आज नारी के संबंध राष्ट्रकवि गुप्त जी की पंक्तियों में शीपन करना होगा:-

अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी,

आँचल में है दूध आँखों में पानी।

आज की नारी “शकुंतला” महाकाव्य की नाभि नायिका शकुंतला की भाँति निष्ठुर नियति से करूणा के लिए निवेदन नहीं करेगी।

घृणा की धनमाला चाहे प्रणय-पीयूष से जग को धोले,

हाथ जीवन नियति मेंरी! तू करूणा की गाँठ खोले।

अतः आधुनिक वैज्ञानिक युग में व्यस्त व्यक्ति को नारी का सहयोग लेना ही पड़ेगा। उनके स्नेह आँचल की शीतल छाया में ही उन्हें शांति का आनंद प्राप्त होगा। उनके बिना कोई काम नहीं होगा क्योंकि “आधुनिक नारी” लेखक के शकुन्तला महाकाव्य की नारी है।

नारी शीतल नीर मनुज का
नारी देह की मृदुल सरिता,
पावस की बढ़ती है रिमझिम
नर के निविड तिपिर की तड़िता।

आज नारियों को पुरुष समाज द्वारा सृजित पुरातन विचार धारणा का बहिष्कार कर इस पुरानी रीति-रिवाज की और विचार की लक्ष्मण रेखा लाँघना होगा। उन्हें विदुषि बनकर अपने अधिकारों और कर्तव्यों के लिए पुरानी परम्पराओं और रूढ़िग्रस्थ आस्था का परित्याग करके आगे बढ़ना होगा। उन्हें पुरुष समाज में पुनः अपनी जगह स्थापित करनी होगी।

अपमान अपेक्षा का विष पीते
हाथ जन्म-जन्म है बीते,
नियति तो छलती रही तुझे ही
बार-बार सुनीते-सीते।

शिक्षा के आलोक में ही स्त्री अपहरण, बलात्कार, अग्निदान, शोषण, दहेज और अन्य अत्याचारों से अपनी रक्षा डटकर कर सकती हैं। उन्हें पथ अपनी शक्ति पहचान कर अपने विषय में अभिव्यक्त कवि के कथन को झुठलाना होगा।

सुन लो नारी एक नाम है
पीड़न-कसक, क्रंदन, रोदन का,
सुन लो नारी नाम युगों से
चिर अश्रु अपेक्षा-शोषण का।

शिक्षित नारी ही पुरुष वर्ग द्वारा आरोपित, रचित वर्जनाओं और अनुचित आदेशों की अवहेलना करने का साहस संजो सकती है। अतः प्रत्येक नारी का धर्म है कि वह स्वयं शिक्षित हो और अपनी बेटियों को शिक्षित बनाकर आज के स्वार्थी पुरुष वर्ग को ललकारे।

अग्नि ज्वाला में जलती आयी
नारी आगे नहीं जलेगी,
अनुचित राजा राम की
सुनलो आज से नहीं चलेगी।

शिक्षा वो लाठी है जो धारण कर ले तो हमेशा सहारा देगी और स्त्री को यह लाठी की बेहद ही जरूरत

है। अगर नारी शिक्षित हो जाती है तो समाज में उनका अलग ही आदर होता है। भले ही संघर्ष के समय लोग उनको हतोत्साहित करते हैं, निराश करते हैं पर सफलता प्राप्त होने पर उनका अलग ही आदर भाव बन जाता है। कहा भी गया है कि जब एक पुरुष शिक्षित होता है तो वो स्वयं के लिए होता है और जब एक स्त्री शिक्षित होती है तो उनकी तीन पीढ़ी शिक्षित होती है। वह अपने साथ अपने बच्चों को भी देखती है और उनके बच्चों को भी संभालती है। इसलिए स्त्री शिक्षा बेहद जरूरी है। बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ की धारणा सभी को अपनानी चाहिए। तभी हमारा समाज सफल होगा।



वो कौन है?



श्री अम्बिका चरण पात्र
सहायक पर्यवेक्षक

वो कौन है?

जो मुझे घर में कैद कर रखा है।
बाहर जाने नहीं दिया
रेस्तरां में खाने नहीं दिया।

घर में दिया जलाया, घंटी बजाई
लेकिन मंदिर जाने नहीं दिया
आपस में गले मिलने नहीं दिया
खुशियां बांटने तो दूर की बात है।

वो कौन है

स्कूल, कॉलेज दफ्तर, दुकान, बाजार
सब बंद करवा दिया
वो कौन है।



कितने दिन मेहमान है वो

दुनिया को नहीं है पता

कितने दिन और कठिनाई का सामना करना पड़ेगा

ये तो समय बताएगा

परन्तु समय और जीवन अवश्य बदलेगा

सिर्फ हमें हौसला बुलंद रखना है।

जैसे आया वैसे ही गया ।



कु. बबिता मणि

कनिष्ठ अनुवादक

रघुवीर एक चीनी मील में काम करता था। उसके परिवार में वो, उसकी पत्नी और उसके तीन बच्चे ममता, अनु और अनूप थे। रघुवीर की पत्नी का नाम सरिता था। गाँव में रघुवीर और उसके परिवार के सभी सदस्यों की विचारधारा एकदम ही अलग थी और हो भी क्यों ना क्योंकि रघुवीर की आमदनी काफी अच्छी थी। वो पूरा परिवार एक अलग ही सोच रखता था। उन लोगों को अपने आप के अलावा गाँव के सभी परिवार में कोई ना कोई कमी दिखती ही रहती थी। रघुवीर और उसके परिवार वाले जब भी किसी से बात करते थे तो उनकी बातों से उनके संपन्न होने का अभिमान झलकता रहता था। वो किसी को भी अपने आगे समझते ही नहीं थे। उन्हें इस बात का घमंड था कि उनके परिवार की स्थिति के हिसाब से उन्हें किसी की भी जरूरत नहीं है। अपने इसी अभिमान के कारण वो गाँव में किसी के घर किसी भी प्रकार के कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं होते थे और अगर किसी के घर किसी कार्यक्रम में चले भी गए तो वापस आने के बाद हजार कमियाँ निकालते थे तथा उस पर कई दिनों तक उनकी हँसी-ठिठोली चलती रहती थी। रघुवीर की दोनों बेटियाँ पढ़ाई-लिखाई में अच्छी नहीं थी लेकिन उसका बेटा पढ़ने में कुछ ठीक था। उसकी दोनों बेटियों ने किसी तरह से ग्रेजुएशन किया और उसके बाद पढ़ाई छोड़ कर घर पर बैठ गईं। रघुवीर की बड़ी बेटी ममता का मन पढ़ाई-लिखाई में भले ही ना लगे लेकिन वो घर के काम करती थी किंतु उसकी छोटी बेटी अनु तो इस हद तक अभिमानी थी कि वो घर पर भी कोई काम नहीं करती थी, यहां तक कि वो अपने माँता-पिता को एक गिलास पानी तक नहीं देती थी। इस पर जब उसके माता-पिता उसको डाँटते थे तो वह उनसे झगड़ने लगती थी और उन्हें बुरा-भला सुना देती थी।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और रघुवीर का बेटा अनूप दसवीं पास हो गया। अपनी पढ़ाई के बाद अनूप के पास जो समय बचता था उसमें उसने लोगों के घरों में जाकर छोटे बच्चों को कोचिंग पढ़ाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते उसके कोचिंग पढ़ाने के चर्चे चारो-ओर फैलने लगे। कोचिंग के क्षेत्र में उसका वर्चस्व बढ़ने लगा। जब अनूप के पास ज्यादा बच्चों को पढ़ाने का अनुरोध आने लगा तो उसने सोचा कि अगर मैं घर-घर जाकर बच्चों को पढ़ाऊंगा तो मैं इतने सारे बच्चों को पूरे दिन में भी नहीं पढ़ा पाऊंगा और साथ में मुझे मेरी पढ़ाई भी तो करनी है। कुछ सोच-विचार कर उसने गाँव के पास वाले शहर में एक कमरा किराए पर ले लिया और वहाँ पर सभी बच्चों को बुलाकर एक साथ पढ़ाने लगा। इससे कम समय में वो

ज्यादा से ज्यादा बच्चों को एक साथ पढ़ा भी देता और अपने लिए भी समय निकाल लेता था। लेकिन जब अनूप के पास पैसे ज्यादा आने लगे तो उसकी सोच में भी परिवर्तन होने लगा। अब वो अपनी पढ़ाई से ज्यादा कोचिंग पढ़ाने पर ध्यान देने लगा। उसने किसी तरह से प्राइवेट संस्थान से अपनी ग्रेजुएशन पूरी की और अपना पूरा का पूरा ध्यान कोचिंग में लगाने लगा। जब अनूप की कोचिंग में बच्चों की संख्या बढ़ने लगी तो उसने अपनी कोचिंग को स्कूल में परिवर्तित कर दिया। अब अनूप एक कोचिंग पढ़ाने वाला अध्यापक न रहकर किसी स्कूल का प्राधानाध्यापक बन गया था। उसके मन में इस बात का गुर्रर भी भर गया कि वो अब मालिक है एक कर्मचारी नहीं। उसका पारिवारिक माहौल तो वैसे ही अलग था इस पर उसका एक स्कूल का प्राधानाध्यापक होना और भी सोने पे सुहागा वाली बात हो गई। अपने बेटे की इस तरक्की के बाद रघुवीर और उसके परिवार वाले तो मानो हवा से बात करने लगे थे। इधर अनूप की सोच में ऐसा बदलाव आया कि वो अब घरवालों को भी बात-बात पर बेईज्जत करने लगा था। घर में उसके नाम से सब डरने लगे थे। वो जो चाहता था उसके घर में वही होता था। देखते ही देखते उसने परिवार वालों की नाक में दम कर दिया था।

समय बीतता गया और अनूप की उम्र शादी के लायक हो गई लेकिन वह शादी नहीं कर सकता था क्योंकि उसकी दो बहने ममता और अनु में ममता उससे बड़ी और अनु उससे छोटी थी और जब तक बड़ी बहन की शादी ना हो जाए वो अपनी शादी कैसे कर सकता था। लेकिन ये सोच अनूप के परिवार वालों की थी अनूप की नहीं। वो चाहता था कि मेरी शादी जल्द से जल्द हो जाए। इसके बावजूद भी उसने किसी तरह से अपने माता-पिता को इस बात के लिए राजी कर लिया और उसकी शादी भी हो गई। कुछ दिनों बाद उसका एक बेटा भी हो गया। अब वो पूरा ध्यान अपनी पत्नी और अपने बच्चे पर देने लगा। उसका वर्ताव अपनी पत्नी के साथ भी कुछ दिन तक ही ठीक रहा। शादी के कुछ महीने के बाद ही उसने अपनी पत्नी के साथ भी दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया जिसमें अनूप के घरवाले भी बढ़-चढ़ कर अपनी भागीदारी देने लगे क्योंकि वो भी उसकी पत्नी को पसंद नहीं करते थे। अनूप अपनी व्यक्तिगत जिंदगी में इस तरह से खो गया कि उसे अब अपनी बहनों की शादी से कोई मतलब नहीं रह गया। इस बात को लेकर रघुवीर के साथ उसकी लड़ाई होनी शुरू हो गई। पारिवारिक विवाद इस स्तर तक बढ़ गया कि अब अनूप के पास अपनी बहनों की शादी में दिलचस्पी दिखाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रह गया। रघुवीर अनूप की मदद से अपनी बेटियों के लिए रिश्ते देखने लगा और दोनों ही बेटियों का रिश्ता एक साथ पक्का कर दिया। लेकिन दुर्भाग्यवश रघुवीर की बड़ी बेटी ममता का रिश्ता टूट गया। अब क्या करें? वो सब सोच में पड़ गए। बड़ी को छोड़कर छोटी की शादी पहले कैसे कर दें? पर कर भी क्या सकते थे क्योंकि छोटी बेटी का रिश्ता जहाँ तय हुआ था वो सब तैयार थे शादी के लिए। रघुवीर सोचने लगा कि मना करूँ तो कैसे करूँ? रघुवीर को गाँव वालों का भी डर सताने लगा कि कहीं कोई ये ना बोल दे कि बड़ी बेटी से पहले छोटी बेटी की शादी कैसे कर दिया। बहुत सोच-विचार करने के बाद उसने तय किया कि वो अपनी छोटी बेटी की शादी करेगा। इस बारे में गाँव में जो लोग उसके हितैषी थे उसने उन सभी से इस बारे में राय लिया और सभी ने उसको

उसकी छोटी बेटी की शादी के प्रति खुशी जताई। किसी ने भी ऐतराज नहीं किया। और तो और सबने उसका हौसला ग्रह कहकर बढ़ाया कि इसमें तुम्हारी क्या गलती है? तुमने तो अपनी तरफ से अपनी दोनों बेटियों की शादी एक साथ करने फैसला लिया था। अगर बड़ी बेटी के रिश्ते वाले पीछे हट रहे हैं तो उनकी वजह से तुम्हारी छोटी बेटी के रिश्ते पर क्यों प्रभाव पड़े। गाँव वालों ने रघुवीर को समझाया कि वो अपनी छोटी बेटी की शादी करे और बाद में बड़ी बेटी का रिश्ता भी किसी और जगह देख कर कर देना। इतना सब सुनने के बाद रघुवीर का मन हल्का हो गया और उसने अपनी छोटी बेटी अनु की शादी कर दिया। शादी के बाद जब अनु अपने ससुराल गई तो वहाँ पर भी वो अपने माएके वाले तेवर दिखाने लगी। ससुराल वालों को अनु का ऐसा आचरण पसंद नहीं आता था। शादी के कुछ दिनों के बाद ही अनु के व्यवहार की वजह से परिवार में चारो-ओर क्लेश का माहौल बन गया। फिर अचानक एक दिन सुनने को मिला कि अनु आग से जल गई है, उसकी हालत बहुत ही गंभीर है, उसको अस्पताल में भर्ती कर दिया गया है। इस खबर को सुनते ही पूरे गाँव में हाहाकार मच गया। गाँव के कुछ लोगों को लेकर रघुवीर और अनूप अस्पताल पहुँचे। अनु की हालत देखकर अनूप ने अनु के ससुराल वालों के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज करा दी। पुलिस ने अनु के ससुराल वालों को घरेलू हिंसा के मामले में गिरफ्तार कर लिया। इधर अनु की हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ने लगी और उसकी मृत्यु भी हो गई। अब तो रघुवीर और अनूप का पक्ष और भी मजबूत हो गया। अनु के ससुराल वालों के पास उनकी रिहाई का अब कोई रास्ता नहीं रहा। इधर पूरे गाँव वाले रघुवीर और अनूप के साथ खड़े हो गए। जिससे जो बन पड़ता वो उसी प्रकार रघुवीर और अनूप की मदद अनु के ससुराल वालों को सजा दिलाने के लिए करने लगा। लेकिन अनु के ससुराल वालों को अनु के मायकेवालों के व्यवहार के बारे में अच्छे से पता था। उन लोगों ने एक चाल चली और अनूप को बहला-फुसला कर मिलने के लिए बुलाया। जब अनूप उनसे मिलने गया तो उन लोगों ने उसको एक मोटी रकम का ऑफर किया और केस वापस लेने को कहा। अनु के ससुराल वालों ने इतनी मोटी रकम अनूप को देने को कहा कि अनूप का मन ललचा गया। अनूप ने उनसे चुपके से पैसे लिए और केस वापस ले लिया। उधर अनु के ससुराल वाले छुटकर वापस आ गए और इधर जब गाँव वालों को अनूप की इस हरकत के बारे में पता चला तो सब लोग उस पर थू-थू करने लगे लेकिन अनूप को किसी की बात से कोई फर्क नहीं पड़ा। उसने उस पैसे से जमीन खरीदा और उस पर अपना खुद का स्कूल बनवाने का निर्णय किया क्योंकि अभी तक वो अपना स्कूल एक किराए के भवन में चलाता था। लेकिन जिस पैसे से अनूप ने जमीन खरीदा था वो पैसा उसे किसी के जीवन का सौदा करके मिला था इसलिए फलित होना संभव नहीं था।

एक दिन अचानक सुबह की प्रार्थना के समय अनूप के स्कूल की एक दीवार एक बच्चे के ऊपर गिर गई जिसमें वो बच्चा बहुत ही ज्यादा चोटिल हो गया। हद तो तब हो गई जब अनूप उस बच्चे को बीच सड़क पर फेंक कर स्कूल छोड़कर भाग गया और समय पर इलाज न मिल पाने के कारण उस बच्चे ने सड़क पर ही दम तोड़ दिया। इस बात से स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ाने वाले सभी अभिभावक और भी ज्यादा क्रोधित हो गए और सबने मिलकर अनूप के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज करा दी। जब अनूप को पुलिस

नहीं पकड़ पायी तो उसके परिवार वालों को हिरासत में ले लिया। लेकिन अनूप का ज्यादा दिनों तक बच पाना संभव नहीं था। उसको लगने लगा कि एक दिन तो मैं पकड़ा ही जाऊंगा तो क्यों ना कुछ तरकीब लगाई जाए। उसने अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया और जो ज़मीन उसने अनु के ससुराल से पैसे लेकर स्कूल बनवाने के लिए खरीदा था उसको बेच दिया। जमीन के जो पैसे उसे मिले उसे अनूप ने अपना और अपने परिवार वालों की रिहाई के लिए दे दिया। अनूप और उसका परिवार तो छूटकर घर आ गया लेकिन उन लोगों की स्थिति अब पहले जैसी नहीं रही। अनूप का स्कूल भी बंद हो गया और जो जमीन उसने अपनी बहन की जिंदगी के बदले स्कूल बनवाने के लिए खरीदा था अब वो भी उसके पास नहीं रहा। कुछ दिनों के बाद रघुवीर की नौकरी भी चली गई। रघुवीर और उसके परिवार वालों का गुरुर भी चकनाचूर हो गया। इत्तेफाक तो देखिए कि जो पैसे किसी ने अपनी रिहाई के बदले अनूप को दिए थे उस पैसे का उपयोग भी अनूप और उसके परिवार की रिहाई के लिए ही हुआ। इसे ही कहते हैं जैसे आया था वैसे ही चला भी गया।



आओ मिलकर साथ चलें



श्री परमजीत
डीईओ

आओ मिलकर साथ चले
कुछ दूर तुम चलो कुछ दूर हम चलें,
मिलकर ये दूरियां तय हो जाएंगी,
कुछ बोझा तुम उठाओ कुछ हम उठायें,
ये बोझा भी कम हो जाएगा।
आओ मिलकर साथ चले।
ये जिंदगी यूं ही गुजर जाएगी।।
कुछ तुम कहो कुछ हम कहें,
कहना भी मुश्किल न हो पायेगा,
कुछ उजियारा तुम करो कुछ उजियारा हम करें,
ये अंधियारा भी मिट जाएगा।
आओ मिलकर साथ चले।
ये जिंदगी यूं ही गुजर जाएगी।।

कुछ मेहनत तुम करो कुछ हम करें,
अपना भी एक आशियाना बन जाएगा,
कुछ खुशियां तुम दो कुछ खुशियां हम देंगे,
अपना भी आशियाना खुशियों से भर जाएगा।
आओ मिलकर साथ चले।
ये जिंदगी यूं ही गुजर जाएगी।।
राहों में कांटे हैं अनेक,
चलना जब मुश्किल हो जाएगा,
कुछ कांटे तुम हटाओ कुछ कांटे हम हटाएंगे,
ये रास्ता भी खुल जाएगा।
आओ मिलकर साथ चले।
ये जिंदगी यूं ही गुजर जाएगी।।

सभ्यता एवं संस्कृति



श्री सुंदर लाल शाव

कनिष्ठ अनुवादक

इतिहास को पढ़ने पर पता चलता है की सिंधु घाटी एवं मेसोपोटामिया, की सभ्यता प्राचीनतम सभ्यताएं हैं। मेसोपोटामिया की सभ्यता गणित एवं नक्षत्र विज्ञान के लिए जानी जाती है वहीं सिंधु घाटी की सभ्यता नगर निर्माण के लिए जानी जाती है। किंतु दोनों की संस्कृति में व्यापक अंतर देखी जाती है। कई बार बातों बातों में यह प्रश्न उठ जाता है की सिंधु घाटी की सभ्यता श्रेष्ठ एवं संस्कृति समृद्ध थी। सभ्यता एवं संस्कृति के मध्य अंतर कर पाना बहुत कठिन हो जाता है। सभ्यता एवं संस्कृति को एक ही बात समझ जाते हैं जबकि दोनों में अंतर उसी प्रकार है जैसे किसी वस्तु के भौतिक परिवर्तन एवं रसायनिक परिवर्तन में होता है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सभ्यता एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए हमें इसकी सूक्ष्म एवं व्यापक अंतर को समझना जरूरी है, ताकि हम अपने सभ्यता एवं संस्कृति को समझ सकें, एवं उसे अपना सकें। कभी-कभी हम पाते हैं कि एक ही सभ्यता में कई संस्कृतियों को देखा जा सकता है, क्योंकि संस्कृति वंशानुगत भी हो सकती है। जबकि सभ्यता उस काल में वहां निवास कर रहे हैं प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करता है।

सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही संतुष्ट नहीं हो पाता। इन्हें संतुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है उसे संस्कृति कहते हैं।

सभ्यता मनुष्य द्वारा निर्मित समस्त भौतिक वस्तुओं को सभ्यता के अंतर्गत लेते हैं। जो उसकी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं अर्थात् सभ्यता एक साधन है, जो प्रत्यक्ष तथा दर्शनीय है। सभ्यता का संबंध भौतिक वस्तुओं से होता है। उपयोगित के आधार पर इसे अच्छा-बुरा अथवा उपयोगी अनुपयोगी बनाया जा सकता है। संस्कृति समाज के काल एवं परिस्थितियों की उपज होती है। हर समूह के लोग अपनी संस्कृति को एक-दूसरे से श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता अतः मूल्यांकन का प्रश्न नहीं उठता।

सभ्यता के विकास एवं प्रगति के लिए विशेष प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती। संस्कृति के प्रसार के लिए मानसिकता में भी परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

सभ्यता के तत्वों को ज्यों का त्यों अपनाया जा सकता है उसमें किसी तरह की परिवर्तन की आवश्य-

कता नहीं पड़ती। किंतु संस्कृति के तत्वों को जब एक स्थान से दूसरे स्थान में ग्रहण किया जाता है तो उसमें परिवर्तन हो जाता है। जैसे धर्म परिवर्तन के बाद भी लोग अपने पुराने विश्वासों, विचारों एवं मनोवृत्तियों में बिल्कुल परिवर्तन नहीं ला पाते।

सभ्यता मूर्त होती है जबकि संस्कृति अमूर्त। सभ्यता का संबंध भौतिक चीजों से होता है। भौतिक वस्तुएं मूर्त होती हैं किंतु संस्कृति का संबंध अभौतिक चीजों से होता है। उन्हें अनुभव किया जा सकता है। देखा व स्पर्श नहीं किया जा सकता।

सभ्यता वाह्य है जबकि संस्कृति आंतरिक होती है। सभ्यता अंतर्गत भौतिक वस्तुएं आती हैं। जिनका संबंध वाह्य जीवन से सुख-सुविधाओं से होता है। उदाहरण के लिए संस्कृति का संबंध व्यक्ति के आंतरिक जीवन ज्ञान विश्वास, धर्म व कला इत्यादि से होता है। इनसे व्यक्ति को मानसिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

सभ्यता साधन है जबकि संस्कृति साध्य है। सभ्यता एक साधन है जिसके द्वारा हम अपने लक्ष्यों व उद्देश्यों तक पहुँचते हैं। संस्कृति अपने आप में एक साध्य है। धर्म कला, साहित्य व नैतिकता इत्यादि संस्कृति के तत्व हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिए भौतिक वस्तुएं जैसे – धार्मिक पुस्तकें, चित्रकला, संगीत तथा नृत्य बाद्य इत्यादि की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार सभ्यता साधन एवं संस्कृति साध्य है।

अतः स्पष्ट है कि सभ्यता एवं संस्कृति में अंतर है तथापि सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण करने पर दृष्टिगत है कि दोनों की प्रकृति भिन्न-भिन्न होने के पश्चात एक दूसरे के पूरक हैं।



वर्षा रानी



श्री आशुतोष दास
सहायक लेखा अधिकारी

अंतरिक्ष का सीना चीर कर
मोतियों जैसे झरती हो,
अपरूपा तुम रूपमति नायिका धीरे धीरे पांव धरती हो।
आगमन से तुम्हारे हंस उठती है फुल्लकुसुमित धरा,
द्रुमदलों बीच नन्ही रानी कीड़ा
हो जाए दिशाहरा।
मेघ मल्हार से सज्जित गगन
छूता है पर्वत चोटी,
नाचती मोरनी काली घटा देख
गाते प्रणय की गीता।
हरियाली भरे तरू राजि सारे



दिखते हैं मनमोहक,
पूर्णगर्भा होती नदी जलाशय
अनोखी शोभा का द्योतक।
नई पुलक में काम अभिलाषा
मनमें जगाती दीवानी,
अधूरी है सारी सृष्टि तुम बिन
तुम हो वरषा रानी।
कन्हैया का हुआ धरावतरण
बिजली ने किया उजाला,
छोड़ दी थी रास्ता उछलती
यमुना गोप चले नंदलाला।

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2021 की संक्षिप्त रिपोर्ट

उद्घाटन समारोह :- 14 से 28 सितंबर, 2021 तक आयोजित किए गए हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन 14 सितंबर, 2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालय- लेखा एवं हकदारी, लेखापरीक्षा-I, लेखापरीक्षा-II तथा केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा द्वारा संयुक्त रूप से कोविड-19 प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस समारोह में कार्यालय लेखापरीक्षा-II के प्रधान महालेखाकार, श्री बिभुदत्त बसंतिया ने अध्यक्षता किया। इस समारोह में कार्यालय लेखा एवं हकदारी के वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), श्री दिनमणि मल्लिक एवं श्री श्रीराज अशोक, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी) भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री दिनमणि मल्लिक, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) द्वारा अध्यक्ष महोदय का स्वागत किया गया तत्पश्चात समारोह को संबोधित किया गया। अपने संबोधन में वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) ने पखवाड़ा को हर्ष-उल्लास के साथ मनाते हुए कार्यालय के अधिकांश कर्मियों को इसमें शामिल करने के लिए सुझाव दिया। इसके बाद प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा लिया गया साथ ही समारोह में उपस्थित अधिकारी/कर्मचारियों के द्वारा प्रतिज्ञा का अनुसरण किया गया। तदोपरान्त गृहमंत्री भारत सरकार का संदेश पढ़ा गया।

संबोधन के क्रम में प्रधान महालेखाकार महोदय ने हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन हेतु अपनी शुभकामनाएँ देते हुए कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन के साथ प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सुझाव दिया।

प्रतियोगिताएँ :- हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालयीन हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी वर्ग के लिए विविध प्रतियोगिताएँ जैसे - टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, राजभाषा प्रश्नोत्तरी एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के अधिकांश कर्मियों ने हिंदी के प्रति अपनी रुचि दिखाते हुए उत्साह के साथ भाग लिया। राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से अधिकारी/कर्मचारीगण को मनोरंजन के साथ-साथ राजभाषा विभाग के नियम एवं अधिनियम से अवगत कराया गया। इस आयोजन से प्रतिभागी अधिक प्रभावित हुए।

समापन समारोह :- 28 सितंबर, 2021 को महालेखाकार महोदय श्री वी.एम.वी. नवल किशोर की अध्यक्षता में समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री दिनमणि मल्लिक, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) ने अध्यक्ष महोदय, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा व वीएलसी) एवं समारोह में उपस्थित सभी का स्वागत के पश्चात पखवाड़ा समारोह के दौरान हुई विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गयी प्रतियोगिताओं के विजेता, निर्णायक तथा पखवाड़ा के सफल आयोजन में सहभागिता हेतु हिंदी अनुभाग के कर्मियों को महालेखाकार महोदय, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार लेखा व वीएलसी के कर-कमलों द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान

किया गया। उसके बाद महालेखाकार महोदय ने अपने संबोधन में सभी प्रतिभागियों, निर्णायकों एवं अन्य सहायकों को कोविड-19 महामारी जैसी विषम परिस्थिति में भी पखवाड़ा समारोह के सफल आयोजन हेतु बधाई दी।

कार्यक्रम के अंत में श्री यशवंत कुमार वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा समापन समारोह में उपस्थित अध्यक्ष महोदय, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा व वीएलसी) को आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया एवं महालेखाकार महोदय की अनुमति से हिंदी पखवाड़ा समारोह – 2021 के समापन की घोषणा की।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम

1	टिप्पणी एवं मसौदा लेखन (16/09/2021)	
हिंदी भाषी	प्रथम	सुश्री निवेदिता, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री अभय कुमार सिन्हा, डी.ई.ओ
	तृतीय	श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी
हिंदीतर भाषी	प्रथम	श्री मनोरंजन पाणिग्राही, वरि.लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्रीमती प्रभा कंगारी, वरि. लेखाकार
	तृतीय	श्रीमती शांतिलता सेठी, पर्यवेक्षक श्रीमती बीणापाणि महांति, वरि. लेखाकार
2	राजभाषा प्रश्नोत्तरी (17/09/2021)	
हिंदी भाषी	प्रथम	श्री तिलक कुमार, डी.ई.ओ
	द्वितीय	श्री अनुरोध आनंद, सहा.लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री अभय कुमार सिन्हा, डी.ई.ओ
हिंदीतर भाषी	प्रथम	श्री बिभुदत्त दोरा, लेखाकार
	द्वितीय	श्री सेल्लिन सेकान चौधुरी, सहा.लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री मनोरंजन पाणिग्राही, वरि. लेखा अधिकारी
3	निबंध लेखन (20/09/2021)	
हिंदी भाषी	प्रथम	श्री संजीव कुमार दुबे, डी.ई.ओ
	द्वितीय	सुश्री निवेदिता, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री मुकेश कुमार, डी.ई.ओ
हिंदीतर भाषी	प्रथम	श्रीमती प्रभा कंगारी, वरि. लेखाकार
	द्वितीय	श्री प्रभात कुमार प्रधान, सहा.लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री पुरुषोत्तम नंद, सहा. लेखा अधिकारी श्री रबीन्द्र कुमार दास, सहा. लेखा अधिकारी

हिन्दी पखवाड़ा 2021 का शुभारंभ एवं आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ



हिन्दी पखवाड़ा 2021 का समापन समारोह एवं प्रमाण पत्र वितरण के झलकियाँ







कार्यालय समाचार पदोन्नत अधिकारी/कर्मचारी

पर्यवेक्षक		
क्र.सं.	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदोन्नति की तिथि
1.	बनमाली भोई	01.04.2021
2.	एसके मोहम्मद सादिक	21.04.2021
3.	प्रफुल्ल च. महांति	01.06.2021
4.	अरविंद मिश्रा	01.06.2021
5.	बिजय कुमार नायक-II	01.07.2021
6.	लेबनान एक्का	01.07.2021
7.	बाईधर सोरेन	02.08.2021
8.	दिनेश नारायण मुखी	01.09.2021
9.	रघुनाथ दास	01.09.2021
सहायक पर्यवेक्षक		
1.	बसंत कुमार सेथी	01.04.2021
2.	गिरिजा एस.महापात्र	21.04.2021
3.	बिष्णु चरण नायक	03.05.2021
4.	सुकुमार बेहेरा	06.05.2021
5.	संतोष कुमार महांति	01.06.2021
6.	दिलीप कुमार राउत	01.06.2021
7.	अशोक कुमार पात्र-I	01.06.2021
8.	बल्लभ च. नायक	01.06.2021
9.	जगबंधू त्रिया	01.06.2021
10.	सोमनाथ बाघ	01.06.2021
11.	परमेश्वर कालो	01.06.2021
12.	ध्यान च. मुर्मू	01.06.2021
13.	गंगाधर नायक-II	01.07.2021
14.	लिंगराज नंदन बेहेरा	01.07.2021
15.	बबिताराणि सेथी	01.07.2021
सहायक लेखा अधिकारी		
1.	अमृत निर्बान आचार्य	31.05.2021
2.	प्रवीण पटेल	31.05.2021
3.	सेल्लिन सेकान चौधुरी	31.05.2021
4.	रामबालक शर्मा	31.05.2021
5.	निवेदिता	31.05.2021
6.	अक्षय कुमार	31.05.2021
7.	प्रदीप कुमार	31.05.2021
8.	आलोक कुमार	31.05.2021
9.	अभिषेक शर्मा	01.06.2021
लेखाकार		
1.	लिलिप्रवा सासमल	01.07.2021
2.	दीपक कुमार दाश	01.07.2021

समस्त पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों को वातायन परिवार की तरफ से हार्दिक अभिनंदन एवं बधाई।

सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	पुरुषोत्तम साहू	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-04-2021
2.	किर्तन दाश	सहायक लेखा अधिकारी	30-04-2021
3.	लक्ष्मीनारायण पट्टनायक	सहायक लेखा अधिकारी	30-04-2021
4.	बिद्याधर नायक II	सहायक लेखा अधिकारी	30-04-2021
5.	अच्युत कुमार राउत	सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2021
6.	सुबोध कुमार पत्री	सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2021
7.	युधिष्ठिर नायक	सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2021
8.	लक्ष्मीचरण दास	वरिष्ठ लेखाकार	30-04-2021
9.	निशीकांत नायक	वरिष्ठ लेखाकार	30-04-2021
10.	भगवती प्र. पंडा	सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2021
11.	निरंजन साहू-II	सहायक लेखा अधिकारी	31-05-2021
12.	बिनोद चं. पाढ़ी	सहायक लेखा अधिकारी	31-05-2021
13.	दुर्गा चरण साहू	सहायक लेखा अधिकारी	31-05-2021
14.	जगन्नाथ दास	सहायक लेखा अधिकारी	31-05-2021
15.	बैकुंठ च. बेहेरा	पर्यवेक्षक	31-05-2021
16.	रबींद्रनाथ राउत	पर्यवेक्षक	31-05-2021
17.	निरंजन सेठी	सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2021
18.	गनेश्वर साहू	सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2021
19.	मनोज कुमार महांति	सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2021
20.	रबी सेठी	सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2021
21.	माधव सेठी	सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2021
22.	धरणीधर नायक	वरिष्ठ लेखाकार	31-05-2021
23.	रबीनारायण मल्लिक II	वरिष्ठ लेखाकार	31-05-2021
24.	सुकांत कु. महांति	सहायक लेखा अधिकारी	31-05-2021
25.	गदाधर साहु-I	सहायक लेखा अधिकारी	30-06-2021
26.	पुरुषोत्तम बल	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2021
27.	बिजय कुमार नायक-I	पर्यवेक्षक	30-06-2021
28.	राधेश्याम ए. बेहेरा	पर्यवेक्षक	30-06-2021
29.	सब्यसाची दत्ता	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2021
30.	सूर्यमणि राणा	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2021
31.	बिजय कुमार भुयान	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2021
32.	गगन बिहारी मंत्री	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2021
33.	सोमनाथ ओराम	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2021
34.	ज्योति टोप्पो	सहायक पर्यवेक्षक	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति 30.06.2020
35.	पी सरोजा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति 30.06.2020
36.	सरत चंद्र कुंडू	सहायक लेखा अधिकारी	31-07-2021
37.	टिकेश्वर लाक्रा	सहायक पर्यवेक्षक	31-07-2021
38.	सुनील कुमार सतपथी	पर्यवेक्षक	31-08-2021
39.	निरंजन पंडा	सहायक पर्यवेक्षक	31-08-2021
40.	लुईस टिकी	सहायक पर्यवेक्षक	31-08-2021
41.	क्षिरोद चं. परिडा	वरिष्ठ लेखाकार	31-08-2021
42.	दीपक कुमार सिंहा	पर्यवेक्षक	30-09-2021
43.	श्रीबाछ कु. राउत	सहायक पर्यवेक्षक	30-09-2021
44.	बौरीबंधू सेठी	लेखाकार	30-09-2021
45.	कैलाश चं. सेठी	एमटीएस	30-09-2021

वातायन परिवार के तरफ से सेवानिवृत्त हुए सभी अधिकारी/कर्मचारी गण को निष्ठापूर्वक कार्यकाल पूर्ण करने पर बधाई एवं सेवा उपरांत उनके सुखमय दीर्घायु जीवन की मंगलमय शुभकामना।

साथी जो बिछड़ गए

क्र.सं.	नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
1.	चंद्रमा प्रधान	पर्यवेक्षक
2.	शंकर अधिकारी (पुरी कार्यालय)	वरिष्ठ लेखाकार
3.	प्रदीप कुमार जेना (पुरी कार्यालय)	वरिष्ठ लेखाकार
4.	बटकृष्ण जेना (पुरी कार्यालय)	वरिष्ठ लेखाकार
5.	क्षितिज राम बेहेरा	वरिष्ठ लेखाकार
6.	गनेश्वर साहू	सहायक पर्यवेक्षक
7.	निरद प्रवा रायगुरु	वरिष्ठ लेखाकार
8.	सुदर्शन बेहेरा	वरिष्ठ लेखाकार
9.	अरूण कु. राय	सहायक पर्यवेक्षक
10.	दयानिधि बाघ	वरिष्ठ लेखाकार

बिछड़े हुए साथियों के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को परम सद्गति प्राप्त हो एवं उनके परिवारजनों को इस दुखद परिस्थिति से उबरने की शक्ति दें।



पाठकों की पाती

File No./-1/2019-20/

कार्यालय महालेखाकार(लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक-राजभाषा कक्ष /पत्रिका समीक्षा/के-1/ 2021-22/ 17/08/2021

वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक.)

ओडिसा, भुवनेश्वर

विषय- अर्द्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "वातायन" के 100 वें अंक की प्रति की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

सन्दर्भ- हि.प्र./ हिंदी पत्रिका/2021/36 दिनांक 04.08.2021

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "वातायन" के 100 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका हिंदी के प्रचार प्रसार में महती भूमिका निभा रही है।

पत्रिका की साज-सज्जा तथा मुद्रण अत्यन्त सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में सभी लेख, कहानियाँ व कविताएँ रुचिकर एवं उपयोगी हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री दीपक यादव का लेख "सच मत मान लेना", श्री संजीव दुबे का लेख "रिश्तो की गहराई", श्रीमती शान्तिलता देवी की कहानी "अंतिम फैसला" एवं श्री रवि कुमार की कहानी "सब्र का बौध" विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।
सादर।

भवदीय

हस्ता-

कल्याण अधिकारी/

राजभाषा कक्ष

File No..../-11005/02/2021-22/

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर।

क्रमांक: रा.भा.अ./एच-11005/02/2021-22/

दिनांक: 18/08/2021

सेवा में,

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन),

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),

ओडिसा, भुवनेश्वर।

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "वातायन" के 100 वें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "वातायन" के 100 वें अंक की प्राप्ति हुई, अतः आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सराहनीय एवं बोधगम्य हैं, जिनमें मौलिक सोच एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति समाहित हैं। पत्रिका में समाहित समग्र छायाचित्र प्रशंसा के योग्य हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को पुनः बधाई एवं इसकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

Atoorva Sinha

Accountant General

राजभाषा अनुभाग



भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़-160036
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT)
PUNJAB
CHANDIGARH -160036

क्रमांक: हि.प्र./हिंदी पत्रिका समीक्षा/2021-22/281.
दिनांक: 08.09.2021.

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिसा,
भुवनेश्वर-751001.

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "वातायन" के 100वें अंक का प्रेषण।

संदर्भ: दिनांक 09.08.2021 का ई-मेल।

महोदय/महोदया

ई-मेल द्वारा संदर्भित पत्र एवं आपकी कार्यालयी पत्रिका "वातायन" का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी ई-पत्रिका के सफल 100वें प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ व मुद्रण विशेष रूप से सराहनीय है। इसके साथ ही छाया चित्रों एवं प्रेरणादायी विचारों का संकलन अति-उत्तम है। हिंदी भाषा विश्व भर में तेजी से प्रसारित हो रही है जिसका श्रेय हिंदी लेखकों के साथ-साथ हिंदी भाषी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशकों एवं कार्यालयों को भी जाता है।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "वातायन" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "सुगंधा" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी

ई मेल/E-mail:agrupunjab@cag.gov.in, ई पी ए बी एस टूराम/टेल:EPABX-0172-2759200, फैक्स/Fax:0172-2773931, टेलिग्रा/Telegram:Punaudit

पाठकों की पाती



हिन्दी के प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- ☞ उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिन्दी में करें।
- ☞ फाइलों पर विषय अनिवार्य रूप से हिन्दी या द्विभाषी में लिखें।
- ☞ कम्प्यूटरों में यूनिकोड/देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- ☞ धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिन्दी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- ☞ हिन्दी में प्राप्त पत्रों के जवाब अनिवार्यतः हिन्दी में दें।
- ☞ सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी में उपयोग करें।
- ☞ मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिन्दी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- ☞ हिन्दी न जानने वालों को हिन्दी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें।